

2890. Vgl. Spruch 3031.
2897. Vgl. Spruch 3374.
2917. BHARTR. 3, 36 lith. Ausg. III. b. रागाश्च, die Scholien aber रोग.
2931. Lies am Schlusse: der bei eintretendem Unglück sich leicht einstellt.
2937. ÇATAKÂV. 61. c. गोचरविचित्रचरित्रिताय.
2938. ÇATAKÂV. 29. d. बन्धैर् st. यत्नैर्.
2968. = KÂN. 23 bei WEBER. b. प्रभातोदीपको. c. त्रैलोक्योदीपको वर्षः. d. सुपुत्रः.
2977. = KÂN. 63 bei WEBER. b. परिस्त्रणोयः. d. वशतावसन्ना st. च कुतो वशित्वम्.
2978. ÇATAKÂV. 70. a. घात st. घातम्. Streiche tiefe vor Kenntniss und füge sicher vor selten hinzu.
2980. ÇATAKÂV. 78. d. कुत्सा स्यात्कुपरीक्षकेषु.
2996. = VRDDHA-KÂN. 8, 17. a. शुद्ध st. शुचि. b. शुद्धा st. शुचिर्. c. तेमकरो.
3008. R. 3, 33, 18 ed. Bomb. a. शुष्क. b. लोष्ठैरपि च पांसुभिः. c. स्थानात् st. राश्य.
- d. कार्यं स्यादमुधाधिपैः.
3019. ÇATAKÂV. 23. c. d. अन्तिनुरप्रैः पिहितशमतनुत्रं.
3024. = KÂN. 33 bei WEBER. VRDDHA-KÂN. 2, 9. b. Das richtige मौक्तिकं an beiden Stellen.
3022. Auch MBh. 11, 67.
3023. = KAVITÂMRITAK. 89.
3042. ÇATAKÂV. 11. b. Richtig शट्याया.
3047. Vgl. GALAN. Varr. 6.
3050. Die erste Hälfte = der ersten Hälfte von BHAG. 18, 47. Vgl. Spruch 4968.
3052. = PRASAṆGÂBH. 11, b. c. करुणाकराणां. Vgl. Spruch 4174.
3059. ÇATAKÂV. 106. a. वर्णं सितं परिकल्प्य.
3065. fg. Auch MBh. 12, 2090. fg. 3065, a. एतान् st. इमान्.
3072. = KAVITÂMRITAK. 36. c. मित्रा तन्ना भयं क्रोधम्.
3073. Vgl. Spruch 4253.
3079. = VRDDHA-KÂN. 16, 18. a. कुट (d. i. कटु) st. विष. c. d. सुभाषितं च सुस्वाङ्ग संगतिः सुज्ञे ज्ञेने.
3084. ÇATAKÂV. 64. b. पुलकितवपुषां st. प्लवलुलितधियोः. d. स्थूलोत्तुङ्गस्तनेषु प्रसृत-  
करपुटस्पर्शलीलोद्यतानाम् (gute Lesart).
3087. = VRDDHA-KÂN. 4, 44 (10). b. पण्डिताः st. साधवः. c. कन्या प्रदीयते.
3095. = KÂN. 101 bei WEBER. c. परित्यक्तम् st. परिग्रष्टम्.
3113. a. श्रुत st. सतः. d. शुष्कवृत्तम् Comm.